काफिरों से दोस्ती निभाने वालों के लिए सज़ा

इरशाद ए रब्बानी है

"और ज़ालिमों की तरफ न झुको के तुम्हे आग छुएगी" (सूरेह हूद #113)

अहमद यार खान नईमी रेहमतुल्लाह अलेह इस आयत की तफ़्सीर में फरमाते हैं "हरगिज़ माइल भी न होना उन बदबख्त काफिरों की तरफ जो दुनिया जहान में खाली रहे यानी कौली और अमली मुहब्बत तो दरकिनार उन की तारीफ का दिल में ख्याल तक न आने पाए न उनके किसी अमल से खुश होना, न दीन के मुक़ाबिल कभी किसी मुआमले में किसी काफिर की इताअत करना,न कुफ़्फ़ारों और बदकारों की मजलिसों सोहबतों में बैठना इनमे से जो काम भी किया जाये तो मैलान(यानी काफिरों की तरफ झुकना) पाया गया लिहाज़ा ऐ मुसलमानों ,अगर तुम बाज़ न आये तो अल्लाह और उसके रसूल अलेह सलाम की मुहब्बत तुम से मिट जाएगी इस का अंजाम क्या होगा तुम को जहन्नुम की आग भड़कती हुई छू लेगी और उसका छूना भी बड़ा अज़ाब है

ये तो सिर्फ मैलान ए ज़ुल्म(ज़ालिम की तरफ झुकना) की सज़ा है तो अंदाज़ा लगाओ के ज़ालिम की सज़ा क्या होगी (तफ़्सीर ए नईमी)

मुसलमान कौन?

इरशाद ए रब्बानी है

1.तो ऐ महबूब! तुम्हारे रब की क़सम वो मुसलमान न होंगे जब तक अपने आपस के झगड़े में तुम्हें हाकिम न बनायें फिर जो कुछ तुम हुक्म फरमा दो, अपने दिलों में उस से रुकावट न पाएं और जी से मान लें (सूरेह निसा #65)

यानी मुसलमान वही है जो अपने दीनी और दुनयावी मुआमलों में हुज़ूर अलेह सलाम के हुक्म को माने जैसा हुज़ूर अलेह सलाम ने फ़रमाया वैसा करे, अपनी तरफ से दीन में तावीलें न करे

2.तुम न पाओगे उन लोगों को जो यक़ीन रखते हैं अल्लाह और पिछले दिन पर(यानी क़यामत) के दोस्ती करें उनसे जिन्होने अल्लाह और उसके रसूल से मुखालिफत की अगरचे वो उनके बाप या बेटे या भाई या कुनबे वाले हों, यह हैं जिनके दिलों में अल्लाह ने ईमान नक़्श फरमा दिया (सूरेह मुजादिला #22)

यानी मुसलमान वही है जो अल्लाह और उसके रसूल अलेह सलाम से मुखालिफत करने वाले को अपना दुश्मन जाने चाहें वो उसके बाप या दोस्त या भाई या रिस्तेदार ही क्यों न हों

3.ऐ ईमान वालों! तुम में जो कोई अपने दीन से फिरेगा(यानी मुर्तद हो जायेगा) तो अनक़रीब अल्लाह ऐसे लोग लाएगा के वो अल्लाह के प्यारे और अल्लाह उन का प्यारा, मुसलामानों पर नरम और काफिरों पर सख्त, (सूरेह अल मायेदा #54)

यानी मुसलमानों की पहचान यह है के वो अपने मुसलमान भाई के लिए नरम होते हैं और काफिरों के लिए सख्त होते हैं **अल्लाह तआला हमें काफिरों , बदमज़हबों , गुमराहों , ज़ालिमों की सोहबत से बचाये और मुसलमानों से अच्छे अख़लाक़ से पेश आने की तौफ़ीक़ अता फरमाए.............आमीन**

डरो खुदा से होश करो कुछ, मकरो रिया से काम न लो
या इस्लाम पर चलना सीखो, या इस्लाम का नाम न लो

मुसलमान कौन ?



नाशिर

तहरीक निज़ामे मुस्तफा

tehreeknizamemustafa@gmail.com

मौजूदा ज़माने में मुसलामानों को अपना ईमान और अक़ीदा बचाना बहुत मुश्किल हो गया है ईमान के चोर अपनी चालवाज़ियों और फरेबकारियों के ज़रिये भोले भाले मुसलमानों की आख़िरत बर्बाद करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं ऐसे में ज़रूरी है के हमें उल्माए ए हक़ की तरफ रुजू करना चाहिए ताके हम गुमराह फ़िरक़ों की फ़रेबकारियों से आगाह हो सकें और अपने ईमान और अक़ीदा की हिफ़ाज़त कर सकें।

अभी कुछ दिनों पहले एक मक़ाला बनाम "**इस्लाह ए समाज की बुनियादी बातें**" नज़र से गुज़रा जिसको '**अल अमीन एजुकेशनल एंड वेलफेयर सोसाइटी बरैली**" की जानिब से इशाअत किया गया था, पढ़कर बहुत हैरत हुई के आज के नाम निहाद मुसलमानों को किया हो गया जो काफिरों के क़दमों में गिरे जा रहे हैं जिन लोगों के साथ इस्लाम मुहब्बत करने को हराम क़रार देता है उन्हीं को अपना भाई बताकर मुसलमानों को उनसे मुहब्बत करने का पाठ पढ़ाया जा रहा है और शरीयत ए इस्लामिया को मजरूह किया जा रहा है

“काफिर की मौत से भी डरता हो जिसका दिल
कौन कहता है उसे कि मोमिन की मौत मर”

उस मक़ाले में सूरेह निसा की पहली आयत का हवाला देते हुए ये ज़ाहिर किया गया के "**सारे इंसान आपस में भाई भाई हैं चाहें वो किसी भी धर्म के हों लिहाज़ा हमें किसी से नफरत नहीं करना चाहिए**"

क़ुरआन ए पाक के आप तमाम तर्जुमें और तफ़ासीर पढ़लें लेकिन आपको इस आयत का ये मतलब नहीं मिलेगा लेकिन **अफ़सोस सद अफ़सोस** काफिरों और मुशरिकों को अपना भाई बनाने के लिए ये लोग इस हद तक गुज़र गए के मआज़अल्लाह इन्होंने क़ुरान पर झूठ बांधा और क़ुरआन पर झूठ का मतलब इन्होंने अल्लाह पर झूठ बांधा

इरशाद ए रब्बानी है

“उस से बढ़कर ज़ालिम कौन जिस ने अल्लाह पर झूठ बांधा या उस की आयतें झुटलायीं
(सूरेह आराफ़ #37)

अब आइये हम क़ुरआन ए मजीद से कुछ आयात पेश कर रहे हैं जिन्हें पढ़कर आपका ज़हन बिलकुल साफ़ हो जायेगा और पता चलेगा के अल्लाह ने हमें क्या करने का हुक्म दिया है और हम क्या कर रहें हैं और नाम निहाद मुसलमानों का शक भी दूर हो जायेगा इन शा अल्लाह

1. **मुसलमान मुसलमान भाई हैं** (सूरेह हुजरात #10)
2. **मुसलमान काफिरों को अपना दोस्त न बना लें मुसलमानो के सिवा और जो ऐसा करेगा उसे अल्लाह से कुछ इलाक़ा न रहा** (सूरेह आल ए इमरान #28)
3. **ऐ ईमान वालो ! अपने बाप और अपने भाइयों को दोस्त न समझो अगर वो ईमान पर कुफ्र पसंद करें और तुम में जो कोई उनसे दोस्ती करेगा तो वही ज़ालिम है** (सूरेह तौवा #23)
4. **ऐ ईमान वालो जिन्होंने तुम्हारे दीन को हसी खेल बना लिया है वो जो तुम से पहले किताब दिए गए(यहूद व नसारा) और काफिर उनमे से किसी को अपना दोस्त न बनाओ और अल्लाह से डरते रहो अगर ईमान रखते हो** (सूरेह मायदा #57)
5. **ज़रूर तुम मुसलमानो का सब से बढ़कर दुश्मन यहूदियों और मुशरिकों को पाओगे** (सूरेह मायदा #82)

मज़कूरा आयतों से हमें पता चल गया के काफिरो और मुशरिकों से दोस्ती करना कैसा है और अल्लाह ने यहाँ तक फ़रमाया की जो कोई उनसे दोस्ती करेगा तो अल्लाह का उससे कुछ इलाक़ा नहीं है यानी सीधा वो जहन्नुम रशीद हो जाएगा और दूसरी जगह इरशाद फ़रमाया अगर तुम्हारे बाप और भाई भी ईमान पर कुफ्र को सिर्फ पसंद करें तो उनसे भी दोस्ती न निभाओ उन्हें भी दूध में से मक्खी की तरह निकाल कर फ़ेंक दो और फ़रमाया काफिरों ने तुम्हारें दीन का हसी खेल बना लिया है तो तुम कैसे उन्हें भाई या दोस्त बना सकते हो और अगर तुम ईमान वाले होंगे और अल्लाह से डरते होगे तो हरगिज़ उन्हें दोस्त नहीं बनाओगे

अल्लाह तआला ने मुसलमानों का सब से बढ़ा दुश्मन यहूदियों और मुशरिकों को बताया, हम जिस मुल्क़ में रह रहे हैं उसमें तादाद के हिसाब से मुशरिक ज़्यादा हैं इसलिए हमारे सबसे बढ़कर दुश्मन मुशरिक हैं अफ़सोस आज नाम निहाद मुसलमान अल्लाह के फरमान को भूलकर मुशरिकों के तलबे चाटते नज़र आ रहे हैं और उनके साथ दोस्ती निभाते नज़र आ रहे हैं क्या इसी लिए तुम्हे मुसलमान बनाया गया था की तुम दुनिया में आकर काफिरो मुशरिकों से मुहब्बत और उल्फत का दर्स दो आज तुमने अल्लाह और उसके रसूल नबी ए करीम को नाराज़ क्या है तभी आज मुसलमान दर दर की ठोकरें खा रहे हैं आज मुसलमान हर जगह मुसीबतों में नज़र आ रहा है सिर्फ इसलिए के तुमने अपने दीन को छोड़कर कुफ्र में इज़्ज़त तलाश करने लग गए हो| काफिरों से मुहब्बत का पाठ पढ़ाने वाले अपनी आख़िरत का जनाज़ा न निकाले और हाँ अगर उन्हें अगर कुफ्र पसंद हैं तो इस्लाम का नाम न लें और न ऐसे मकाले छापकर मुसलमानो को काफिरों से मुहब्बत करने का दर्स दें| इज़्ज़त अल्लाह के हाथ में है और तुम काफिरों से इज़्ज़त की भीक मांग रहे हो

इरशाद ए रब्बानी है

वो जो मुसलमानों को छोड़कर काफिरों को दोस्त बनाते हैं क्या उनके पास इज़्ज़त ढूंढते हैं ? तो इज़्ज़त तो सारी अल्लाह के लिए है (सूरेह निसा #139)

“न ले काफिरों से मदद कोई सुन्नी

सुलहकुल्ली फ़ितने मिटा ताज वाले”

हमारा दीन हमें हर किसी से प्यार व मुहब्बत करने की इजाज़त नहीं देता क्यूंकि जैसे हमारे लिए खाने पीने की हद्दें बनी हुई हैं की ये हलाल है ये हराम है ऐसे ही दोस्ती और दुश्मनी की भी हद्दें हैं की ये दोस्ती हराम है और ये हलाल|